ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 134-136
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

धर्मशास्त्रों में तीर्थराज प्रयाग : एक अनुशीलन

छोटे लाल यादव

शोध अध्येता, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 28.02.2022, Revised- 05.03.2022, Accepted - 08.03.2022 E-mail: chhotelaly01@gmail.com

सारांशः – *"धर्मस्य शास्त्रमिति धर्मशास्त्रम्" इस वाक्य के अनुसार धर्मशास्त्र का अर्थ धर्म के द्वारा राजा का प्रजा पर ऋणदान निक्षेप आदि व्यवहार पदों का निर्णय करते हुए अनुशासित करने का माध्यम कहा गया है।[1] धर्मशास्त्र दो शब्द, 'धर्म' और 'शास्त्र' के योग से बना है। यहाँ धर्म और शास्त्र में दोनों शब्द विचारणीय है। 'धर्म' शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता हैं संस्कृत में 'धर्म' के अनेक अर्थ हैं। 'धर्म' शब्द 'धृञ' धारणे धातु से मन् प्रत्यय होकर निष्पन्न हुआ हैं। जिसका अर्थ पालन करना, आलम्बन लेना, धारण करना आश्रय देना है।[2] शास्त्र शब्द 'शासु' धातु से 'त्रयल्' प्रत्यय के सहयोग से निष्पन्न है। जिसका अर्थ अनुशासन या उपदेश करना होता है।[3] अतः इन दोनों शब्दों का अर्थ अनुशासन का पालन करना, अनुशासन बनाये रखने में आलम्बन देना है। ऋग्वैदिक ऋचाओं में इस शब्द का प्रयोग विशेषण या संज्ञा के रूप में छप्पन बार हुआ है।[4] ऋग्वेद में इस शब्द का प्रयोग पुलिंग में किया गया है। लेकिन अन्य जगह यह नपुंसकलिंग में या उस रूप में जिसे हम पुल्लिंग या नपुसंलिंग दोनों ही समझ सकते है।*

कुंजीभूत शब्द– धर्मशास्त्रो, विचारणीय, धारणे धातु, निष्पन्न, आलम्बन लेना, शास्त्र शब्द, परित्याग रूप, सत्यार्थ।

'धर्म' शब्द को परिभाषित करते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने कहा है कि जो पक्षपात रहित न्याय, सत्य का ग्रहण, असत्य का सर्वथा परित्याग रूप आचार है उसी का नाम धर्म और उससे विपरीत अधर्म है।[5] इसी प्रकार का विचार सत्यार्थ प्रकाश में भी प्रकट है, पक्षपात रहित न्याय, आचरण, सत्य भाषण आदि वेदों से अविरूद्ध है, चाहे प्राण भी चले ही जावें, परन्तु मनुष्य धर्म से कभी भी पृथक् न होवे, मनुस्मृति में धैर्य, क्षमा, मन को प्राकृतिक प्रलोभनों से रोकना, चोरी, त्याग, शौच (मानसिक वाचिक शारीरिक शुद्धि), बुद्धि अथवा ज्ञान, विद्या, सत्य और आक्रोध धर्म के दस लक्षण बताये गए है। धर्म की रक्षा से मनुष्य की रक्षा होती है। अतः धर्म की रक्षा करनी चाहिए।[6] संसार की सभी वस्तुएँ नश्वर है, षरीर के साथ नष्ट हो जाती हैं, धर्म ही मनुष्य के साथ अन्त में जाता है।[7] धर्मशास्त्र शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख मनुस्मृति में प्राप्त हुआ है मनु ने श्रुतियों को वेद या स्मृतियों को धर्मशास्त्र शब्द से व्यवहृत किया है। विष्णु स्मृति के प्रत्येक अध्याय की समाप्ति पर धर्मशास्त्र शब्द का प्रयोग हुआ है।

सभी धर्मशास्त्र साहित्य में मानवीय दृष्टिकोण से स्मृति शास्त्रों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। इनके अलग–अलग समय में रचित होने के परिणामस्वरूप एक दूसरे में कुछ मतभेद प्राप्त होना स्वाभाविक है। संविधानोत्तर काल में मानवों की अधिकारात्मक तथा न्यायार्थ जो कार्य संविधान कर रहा है, प्राचीनकाल में वह कार्य स्मृतिमा या धर्मशास्त्र करती थी।

तीर्थराज प्रयाग के सम्बन्ध में मनुस्मृति में मनु द्वारा लिखा गया है कि हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य उस स्थल से पुरब जिस स्थल पर सरस्वती नदी का बालू में लोप हो जाता है। प्रयाग के पश्चिम दिशा में जो देश स्थित है, उसे मध्य देश के नाम से जाना जाता है –

हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्ये, पत्प्राग्विनशनादपि प्रत्यगेव प्रयागाच्च, मध्यदेशः प्रकीर्तितः।।[8]

धर्मशास्त्रों के द्वारा स्वीकार की गयी परम्परा अनुसार मुण्डन (वपन) का तीर्थराज प्रयाग में विशेष महत्व है, पिण्डदान का गया में कुछ विशेष महत्व है, दान का कुरूक्षेत्र में व देहत्याग का काशी में विशेष महत्वपूर्ण स्थान है।

प्रयागे वपनं कुर्याद् गयायां पिण्डपातनम्। दानं दधात् कुरूक्षेत्रे वाराणस्यां तनु त्येजेत्।।[9]

नारदीय धर्मसूत्र में 'प्रयाग' के क्षेत्रफल के विषय कथित है कि गंगा के तट पर 'प्रयाग' के अतिरिक्त अन्यत्र किसी भी स्थान पर मुण्डन (वपन) का विधान नहीं है।[10]

प्रयाग में वपन के विषय में यह कहा है कि यदि कोई मनुष्य प्रयाग में वपन (मुण्डन) करा लेता है तब उसके लिए कुरूक्षेत्र में दान, गया में पिण्डदान तथा काषी (वाराणसी) में शरीर का परित्याग करना विशेष महत्व नहीं रखता है –

किं गयापिण्डदानेन कष्यां वा मरणेन किम्। किं कुरूक्षेत्रदानेन प्रयागे वपनं यदि।।[11]

विष्णुस्मृति में तीर्थराज प्रयाग को जप, होम एवं तप के लिये श्रेष्ठ तथा अत्यन्त पवित्र स्थान माना गया है। प्रयाग का नाम भी शास्त्रों में कुछ इस प्रकार मिलता है। स्कन्दपुराण में इस स्थान को श्रुति, उपनिषदों में इसे 'प्रयाग'12 और सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद में इसे सीतअसीतसंगमा कहा गया है।

त्रिस्थली सेतु 15 नम्बर पेज में प्रयाग मण्डल के क्षेत्रफल के विषय में यह कहा गया है कि ब्रह्मयूप अर्थात् ब्रह्मा जी

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

के यज्ञ स्तम्भ को खूँटी मानकर यदि कोई उसे डेढ़ योजन रस्सी से चारों ओर मापे तो वह जो पाँच योजन परिधीय भाग होगा, वह प्रयाग मण्डल स्वीकार किया जायेगा इसी सेतु में दूसरे स्थान पर व्याख्यायित है कि पूर्व में प्रतिष्ठान का कुप है, उत्तर में वासुकिह्रद, पश्चिम सीमा में कम्बल तथा अष्वतर है एवं दक्षिणी सीमा में बहुमूल्य है। इन सीमाओं के अन्तःकरण में प्रयाग तीर्थ है।

सुरेश्वर रचिक काशीमृति–मोक्षविचार पेज संख्या (2–9) एवं तीर्थप्रकाश पेज संख्या (313–318) में विस्तार से व्याख्यायित है कि किस प्रकार से वाराणसी या प्रयाग में जान–बूझकर अथवा अनजाने में मृत्यु अवस्था को प्राप्त होने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है। उन्होनें अपने तर्क को निम्नवत रूप से उल्लेख किया है – कर्म के तीन प्रकार है। 'सञ्चित' (पूर्व जन्मों द्वारा पुञ्जित), प्रारब्ध (वर्तमान शरीर में पहुँचने पर आत्मा के साथ क्रियाशीलता प्राप्त करते है) तथा क्रियमाण (इस शरीर तथा भविष्य में किये जाने वाले)।

तीर्थराज प्रयाग के महत्व के विषय में शंख संहिता में कथित है कि जो प्राणी जन 'वर्तमान समय में गया में प्रभास में और पुष्कर में तथा प्रयाग में नैमिषारण्य में जप हवि और तप को करता है वह सारे पापों से छुटकारा पा जाता है।

यददानि गयाक्षेत्रे प्रभासे पुष्करेऽपि च। प्रयागे नेमिषारण्ये सर्वमान्त्यमुच्यते।।[13]

पुष्कर क्षेत्र के विषय में व्यासस्मृति में जप, होम तथा तप को अमृत स्वरूप बताते हुए कहा गया है कि इसको (अमृत) को पीकर 'पितर' लोग इस संसार सागर में तर जाते है। आगे कहा गया है, कि जिस फल की प्राप्ति (पुष्कर) में दान से अर्जित होती है। वह फल ज्येष्ठ एवं कार्तिक में जप करने, होम करने तथा तप करने से प्राप्त होता हैं

धर्मशास्त्रों में प्रयाग के आत्महत्या के सम्बन्ध में भी उल्लेख मिलता है, जो मुख्यतः निम्न है गंगावाक्यावली तथा तीर्थचिन्तामणि दोनों ग्रन्थों ने प्रत्येक वर्ण को प्रयाग में आत्महत्या करने की अनुमति प्रदान की है। तीर्थप्रकाश ग्रन्थ भी प्रयाग में आत्महत्या करने के सम्बन्ध में लिखा गया है, जो विद्वत्तायुक्त एवं विवादास्पद विवेचन प्रस्तुती हैं, इस ग्रन्थ में लिखा गया है कि प्रयाग में समस्त वर्णों के लोग आत्महत्या कर सकते है, ब्राह्मण को छोड़कर। ब्राह्मण को आत्महत्या न करने के सम्बन्ध में इन्होंने तर्क दिया है कि ब्राह्मण कलिवर्ज्य है। इस परिप्रेक्ष्य में त्रिस्थलीसेतु में भी वर्णन है – इसके अनुसार मोक्ष तथा स्वर्गादि फलों की प्राप्ति होतु किसी भी वर्ण सामुदायिक जन आत्महत्या कर सकते है, कुछ विद्वानों का विचार है कि स्वर्ग आदि फलों की इच्छा से आत्महत्या करना कलिवर्ज्य नहीं है। अर्थात् असाध्य रोगी अथवा स्वस्थ स्वास्थ्य वाले समस्त जन प्रयाग में आत्महत्या करने के योग्य है परन्तु बूढ़े माता–पिता को त्यागकर एवं युवा पत्नी तथा छोटे बच्चों को उनके भाग्य पर छोड़कर किसी भी वर्ण समुदाय के जन को आत्महत्या करने का अधिकार नहीं है। इसी के आगे नारायण भट्ट ने कहा है कि गर्भवती नारी तथा बिना पति के अनुमति एवं छोटे बच्चों वाली स्त्री प्रयाग में आत्महत्या नहीं कर सकती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि ऐसी महिला को प्रयाग में किसी भी स्थिति में आत्महत्या करने का अधिकार नहीं है।

एक बार भगवान ब्रह्मा जी के पुत्रों को प्रयाग के विषय में जानने की जिज्ञासा हुई। इस प्रयाग की पुरी जानकारी पाताल लोक में निवास करने वाले शेषनाग को थी सभी लोग शेषनाग के पास पहुँच कर प्रयाग के विषय में जानने की इच्छा व्यक्त की। भगवान शेषनाग ने उनके समक्ष प्रयाग के विश्वव्यापक महात्म्य का वर्णन किया, उन्होंने कहा कि नागराज वासुकि के द्वारा प्रयाग को श्रेष्ठ तीर्थ के रूप में घोषित किया गया है। शेषनाग ने आगे बताया कि तीर्थ दो प्रकार के होते है – 1. कामना पूर्ण करने वाले, 2. मुक्ति प्रदान करने वाले। परन्तु तीर्थराज एक मात्र ऐसी तीर्थ है, जो सारे मनोकामनाओं को पूरा करने वाला है।

अथोच्यते तीर्थराज प्रयाग सर्वतोधिकः तस्य शृण्वन्तु महात्म्यं मुनयः सनकादयः

अर्थात् प्रयाग धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष सभी फल को प्रदान करने का काम करता है। शताध्यायी के कथनानुसार जैसे राजाओं की अनेक पटरानियाँ होती थी ठीक उसी प्रकार से सप्तपुरियाँ की पटरानियाँ है – अयोध्या, मथुरा, गया, काषी, कांची व उज्जयिनी तथा द्वारिका। इन सभी में काशी को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था एक बार देवतागण सप्तपुरियों की सप्तदीपों को सप्तकुल पर्वतों को, सारे तीर्थों को एवं समस्त नदियों को एक तराजू के पलड़े में रखा तथा दूसरे तरफ मात्र प्रयाग को, सभी पर प्रयाग भारी दिखा इसी समय से प्रयाग को तीर्थराज (तीर्थों का राजा) के नाम से जाना जाने लगा।

वनवास जाते समय मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, लक्ष्मण, सीता के साथ प्रयाग में महर्षि भारद्वाज के आश्रम में पहुँचे। भारद्वाज मुनि ने उनका अतिथि सत्कार करने के बाद श्रीराम से प्रयाग में निवास करने के उद्देश्य से प्रयाग के महत्व के विषय में वर्णन करते हुए कहा कि यह स्थान (प्रयाग) गंगा–यमुना नदियों के संगम पर बसा हुआ एक पवित्र एवं पूर्ण स्थान है। यहाँ की प्राकृतिक छटा अत्यन्त मनोहर एवं सुख देने वाली है। अतः आप सुख के साथ यही निवास करिये, भारद्वाज मुनि के बात को सुनने के बाद श्रीराम ने प्रयाग में 14 वर्ष का वनवास न काटने का कारण बताते हुए कहा कि मुनि श्रेष्ठ यहाँ से हमारे जनपद

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

और नगर के वासि बहुत ही निकट है यहाँ हमसे मिलना सुगम समझकर लोग सीता और लक्ष्मण को देखने के लिए प्रायः आते रहेंगे इसलिए हमारा प्रयाग में निवास करना अनुचित होगा। अतः हे भगवन् किसी एकान्त प्रिय स्थान को सोचकर बताये जहाँ जगत जननी सीता सुखपूर्वक रह सके तब भारद्वाज मुनि ने चित्रकुट के स्थान को सर्वोत्तम बताया उसके लिए उसने श्रीराम का मार्गदर्शन भी किया। श्रीराम के अनूज भरत भी श्रीराम के खोज में प्रयाग पहुँचे और भारद्वाज आश्रम पहुँचकर भारद्वाज मुनि से मिले इन सभी का वर्णन भी हमे शास्त्रों में मिलता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रयाग की पवित्र धरती अनन्त काल से धर्मशास्त्रों के स्वर्णिम पेज पर अंकित है। त्रिदेवों के वास से महिमामण्डित इस पुण्यभूमि के दर्शन मात्र से मनुष्य धन्य हो जाता है। इसके अनन्त पुण्य भण्डार को देखते हुए ही भगवान शिव और विष्णु ने इसे 'प्रयाग' नाम से अभिसिंचित किया है। यज्ञों की निरन्तरा इस पुण्यभूमि को पवित्र बनाती है। ब्रह्मा के श्रेष्ठ यज्ञ के कारण प्रयाग के क्षेत्रफल को 'प्रजापति क्षेत्र' भी कहा जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. C. Duncan M. Derret, "The Administration of Hindu Law by the British", Comperative Studies in Society and History, 4:1, (1961), p.p.10-52.
2. डॉ0 ऋतु शुक्ल, प्रमुख धर्मग्रन्थों में नारी अधिकार, पृ0 15.
3. सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन–उणादि0, 4/158.
4. पी0बी0 काणे, धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग–1, पृ0 1.
5. सत्यार्थ प्रकाश 3 समुलास।
6. धर्म एवं हतो हन्ति, धर्मो रक्षतिः रक्षितः – मनुस्मृति, 8.15.
7. मनुस्मृति, 8.17.
8. मनुस्मृति, 2/21.
9. नारदीय धर्मसूत्र।
10. नारदीय धर्मसूत्र, 6/52.
11. नारदीय धर्मसूत्र।
12. विवेकानन्द तिवारी सनातन – समागम महाकुम्भ, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पृ0 66.
13. संखसंहिता, अध्याय –14.

*****